है कि सरदार पटेल ने संविधान सभा में उन की बड़ी प्रशंसा की थी और उन की उपयोगिता पर बहुत कुछ बातें कही थीं। मैं मानता हूं कि उस समय की परिस्थितियां रही होंगी, परन्तु आज 23 वर्षों के बाद जब देश में पहली पीढ़ी आ गई है, हमारे देश की औसत आयु 50 के आस पास है, एक जाति की आधी आयु समाप्त हो चुकी है 23 वर्ष के बाद भी, नई पीढ़ी के आने के बाद भी, जाति की आधी आयु समाप्त हो जाने के बाद भी हम उसी लीक को पीटते रहें यह कहां तक ठीक है ? यह प्रगति का युग है, एक एक मिनट में दुनिया बदल रही है, समाज बदल रहा है, इस बदलते हुए समाज के साथ हम भी पैर मिला कर चल सकें इस के लिये इस बात की कड़ी आवश्यकता है कि जो चीजें इस तरह की प्रतीक के समान हैं उन को हम हटायें। इस लिये उस समय हमारे नेताओं ने जो कुछ कहा वह उस समय की परिस्थितियों में कहा होगा। उस समय की बात समाप्त हो गई। उस समय की कही हुई चीज कभी भी शाश्वत और सनातन नहीं बन सकती। राजनीति में कोई सिद्धान्त और निर्णय शाश्वत और सनातन नहीं होते कि हमेशा उसी तरह से चलते रहें। इस लिये आज बदलती हुई परिस्थितियों में हम को सोचना चाहिये कि यह जो थोड़े से 80–90 लोग बचे हुए हैं, भले ही उन की संख्या थोड़ी हो लेकिन वे प्रतीक हैं हमारी दास्ता के क्योंकि उन्होंने जो वफादारी की कसम ली थी वह ताज के लिये थी और संविधान में जो आर्टिकल 314 है उस में लिखा हुआ है कि :

> "...to a civil service of the Crown in India...".

यानी वह क्राउन की सर्विस में थे, ताज की सर्विस के प्रतीक जो लोग बचे हैं, चाहे वह थोड़े से भी हों, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि अगर प्रतीक एक भी हो तो वह बुरा प्रतीक है, उस को तुरन्त जाना चाहिए। ऐसी स्थिति में मैं समझता हूं कि उन को अपने को परिस्थिति के अनुसार ढ़ालना चाहिये।

मैं आशा कर सकता हूं कि नये समाज में वे अपने संस्कार बदलेंगे। समाजवादी समाज जो है वह कोई ऐसी वैसी चीज नहीं है, समाजवादी समाज जीवन की पद्धति है, उस के अपने कुछ संस्कार हैं, अपनी धारणायें हैं, अपनी परम्परायें हैं और उस का अपना कार्यक्रम है। आज जो लोग 50–50 या 55–55 साल के हैं उन से हम आशा करें कि वह अपने संस्कार बदल सकेंगे, तो यह नहीं हो सकता। इस लिये हम को उन की हैसियत बदलनी होगी, जिस हैसियत ने उन के यह संस्कार पैदा किये हैं, जिन सुविधाओं ने यह संस्कार पैदा किये हैं, 53 करोड़ की जाति में जो यह अतिरिक्त 80–90 आदमी हैं उन के संस्कारों को हम बुरा कहते हैं।

MR. DEPUTY-SPEAKER: The hon. Member may continue on the next day.

RE. BALLOTING OF PRIVATE MEMBERS' BILLS

श्री भोगेन्द्र झा (जयनगर) : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है। पहले तो विधेयक को यहां लिये जाने का प्रश्न बैलट से तय किया जाता है और उस के बाद कमेटी विधेयक के महत्व के मुताबिक उन को ए या बी श्रेणी में रखती है। संविधान का प्रिएम्बल वाला हिस्सा संविधान में एक श्रृंगार बना हुआ है और कानूनन उस को लागू नहीं किया जा सकता है। अमल में उस की कोई कीमत नहीं है। मेरा विधेयक उस को लागू करने की व्यवस्था करने के सम्बन्ध में है। सदन के दोनों पक्षों के लिए वह विधेयक महत्वपूर्ण है। मेरा वह विधेयक बैलट में आ गया था और श्री मधु लिमये के इस विधेयक के बाद पड़ता था। इस बीच में उस को हटा कर उस के स्थान पर एक दूसरा विधेयक डाल दिया गया है। इस का नतीजा यह है कि मेरा विधेयक खत्म हो जाता है। क्या मेरे विधेयक को हटाने के लिए यह बैक-डोर मैथड अपनाया गया है कि बीच में एक दूसरा विधेयक डाल दिया गया है ? मेरा निवेदन है

[श्री भोगेन्द्र झा]

कि यह प्रक्रिया ठीक नहीं है और यह आवश्यक है कि कैटेगरीज का निर्णय विधेयक के महत्व के मुताबिक किया जाये ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Let me deal with this point. It is true that on the last occasion, when we took up Shri Madhu Limaye's Bill, Shri Bhogendra Jha's Bill was next in the queue. But, subsequently, the Committee on Private Members' Bills and Resolutions considered the matter and it was felt by the Committee that the Bill of Shri P. K. Deo was of such urgent importance as to be placed in Category A. That was the recommendation of the Committee. It was placed before the House and the House accepted the recommendation of the Committee. Once the House has accepted it, it means that the Bill of Shri P. K. Deo is placed in category A as a priority and the queue is broken. It is unfortunate. But Shri Jha should have raised this objection at the time when the Report of the Committee on Private Members' Bills and Resolutions was placed before the House. I fully sympathise with him but, under the rules I do not know what can be done. Kindly take your chance on the next occasion.

श्री भोगेन्द्र झा : जब वह बैलट में आ गया, तो वह कसे खत्म हो गया ? मेरे नाम का सवाल नहीं है । संविधान का वह हिस्सा केवल शृंगार बना हुआ है और बेकार पड़ा हुआ है । इस स्थिति को सुधारने के लिए मैं ने अपना यह विधेयक दिया था ।

श्री मधु लिमये (मुंगेर) : एक दफा आर्डर-पेपर, कार्य-सूची, पर इन का विधेयक आ गया था और उस के बाद उस को हटा दिया गया, यह हम को अच्छा नहीं लग रहा है। बीच में एक दूसरा विधेयक ला कर उस को "ए" कटेगरी दे दी गई है । इस लिए वह विधेयक तो कभी भी खत्म नहीं होने वाला है । वह तो आयेगा ही । उस को खुदा भी नहीं हटा सकता है । लेकिन कार्य-सूची में माननीय सदस्य का विधेयक आदा था, लेकिन फिर उस को खत्म कर दिया गया, यह अच्छा नहीं हुआ ।

श्री शिवचन्द्र झा (मधुबनी) : मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या बैलट हुआ या नहीं, क्या कमेटी ने इस बारे में फैसला कर दिया; यदि बैलट हुआ तो पहले विधेयक को क्यों हटा दिया गया । आप को इस बारे में कोई मापदंड निश्चित करना होगा ।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Shri Jha knows the rules. For Private Members' Bills there are two categories, Category A and Category B. Also, unless we change the rules, we have to follow the rules. Once a Bill is placed in Category A, it means that the queue is broken and it gets priority. That is why Shri P. K. Deo's Bill is placed before Shri Jha's Bill. It does not mean that Shri Jha's Bill has been removed. It is on the agenda; but priority is given to Shri Deo's Billl because it was placed in Category A by the House on a recommendation of the Committee. That is the procedure. Unless we change that procedure, I am afraid we have to follow that procedure. So, kindly understand and co-operate with me.

18.35½ hrs.

HALF-AN-HOUR DISCUSSION

VISIT BY WEST GERMAN DELEGATION OF BUSINESSMEN AND FINANCIERS TO INDIA

SHRI JYOTIRMOY BASU (Diamond Harbour): Sir, this new export-oriented labour-intensive industry is a new song of the capitalists. It is a dragnet of plunder that is coming on us. The immediate gains that they expect to get out of this are at different stages—first, at the planning and design stages where they will have a limited life and as we have seen in Rourkela and other ventures importation of overvalued machinery and equipment and our cheap natural resources and labour for a song. That is all they are aiming at.